ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को श्रावणी पर्व
रक्षा बन्धन व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
की हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष 39, अंक 41 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 15 अगस्त, 2016 से रविवार 21 अगस्त, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक नई दिल्ली में सपन्न
अधिकारियों व अन्तरंग सदस्यों के साथ एवं लगभग 20 आर्य प्रतिनिधि सभाओं से पदाधिकारियों ने दर्ज कराई उपस्थिति

दलितों को हिन्दू धर्म से अलग करने का सुनियोजित राजनैतिक षड़यन्त्र

दलित भाई हिन्दू समाज का अभिन्न अंग : स्वामी श्रद्धानन्द जी के पद्चिह्नों पर चलकर गले लगाना होगा

आर्यसमाज के अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र की योजना को लेकर आर्य नेताओं में भारी उत्साह

दलितों के उत्थान के प्रयासों के लिए आर्यसमाज को गांव-देहात में जाना होगा - स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

समाज के पिछड़े वर्ग को गले लगाने की विशेष आवश्यकता : उनके पास जाएं, साथ बैठाएं, साप्ताहिक सत्संग में यज्ञमान बनाएं - सुरेशचन्द्र आर्य

आशा है ईश्वर की कृपा से आर्यसमाज के अपने टीवी चैनल पर कार्य शीघ्र आरम्भ होगा – महाशय धर्मपाल

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक 31 जुलाई 2016 को हनुमान रोड, कनॉट प्लेस स्थित कार्यालय में श्री सुरेश चन्द्र आर्य अग्रवाल जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सभा की इस बैठक में आर्य समाज के कार्यों की समीक्षा एवं प्रचार-प्रसार, हिन्दू संगठन, आर्य समाजों की एकरूपता, शोध व प्रशिक्षण, हिन्दू जाग्रति साहित्य तथा नेपाल आर्य महा सम्मेलन के क्रियान्वयन पर महत्त्वपूर्ण विचार-विमर्श एवं निर्णय लिए गये।

सभा की कार्यवाही ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना मंत्रों से प्रारम्भ हुई। बैठक का संचालन श्री प्रकाश आर्य जी द्वारा किया गया। सभा मन्त्री श्री प्रकाश आर्य द्वारा सर्वप्रथम सुदूर से आए समस्त पदाधिकारियों, प्रतिनिधियों का स्वागत किया गया व सभा द्वारा गत वर्ष में किए गए कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी। तदुपरान्त गत वर्ष दिवंगत हुए आर्य पदाधिकारियों एवं महानुभावों को स्मरण करते हुए श्रद्धांजलि देते हुए दो मिनट का मौन रखा गया।

बैठक की कार्यवाही को गति देते हुए अध्यक्ष जी ने आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र परियोजना पर उपस्थित महानुभावों के विचारों को सुना व उन पर

- शेष पृष्ठ 5 एवं 7 पर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल को लेकर आर्यसमाज में अत्यधिक उत्साह : आवेदन पत्र एवं जानकारी प्राप्त करने के लिए www.thearyasamaj.org पर लॉग्ऑन करें। अन्तिम तिथि : 31 अगस्त (हवाई यात्रा) 15 सितम्बर (बस यात्रा)

अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र की योजना में अति विशेष सहयोग देने के संकल्प हेतु महाशय धर्मपाल जी, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी का स्वागत एवं बैठक में उपस्थित लगभग 20 आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारी एवं प्रतिनिधिगण

संसद भवन में महर्षि दयानन्द का चित्र स्थापित कराने के लिए डॉ. सत्यपाल सिंह जी के नेतृत्व में
लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन जी को सौंपा 151 सांसदों से हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन पत्र

भारतीय संसद भवन की दीर्घा में युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का चित्र स्थापित करवाने के लिए आर्य सांसद एवं वैदिक विद्वान डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने सोमवार 8 अगस्त, 2016 को लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन जी से मिलकर 151 सांसदों से हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन पत्र दिया तथा संसद दीर्घा में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का चित्र एवं मूर्ति स्थापित करने कराने का निवेदन किया। इस अवसर पर सांसद श्री चन्द्रकान्त कैरे (महाराष्ट्र), सांसद श्री जगदम्बिका प्रसाद (उ.प्र.), सांसद श्री प्रह्लाद जोशी जी (कनार्टक), सांसद डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' (उत्तराखण्ड), सांसद श्री भाट्रीहारी मेहताब (उडीसा) भी उनके साथ थे। लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन जी ने प्रस्तुत निवेदन पर सकारात्मक विचार करने का आश्वासन दिया।

वेद-स्वाध्याय

हे अनन्त देव ! हम तुझे कैसे हवि दें

का त अपेतिर्मनसो वराय भुवदग्ने शंतमा का मनीषा।
को वा यज्ञैः परि दक्षं त आप केन वा ते मनसा दाशेम।। -ऋ. 1/76/1
ऋषिः **गोतमो राहूगणः।।** देवता- **अग्निः।।** छन्दः **निचृत्पंक्तिः।।**

शब्दार्थ-अग्ने=हे अग्ने! **ते मनसो वराय**=तेरे मन को वरने के लिए **का अपेतिभुवत्**=कौन-सा उपाय-तेरे पास पहुँचने का कौन-सा साधन है? **का मनीषा शंतमा**=और हमारी कौन-सी हार्दिक इच्छा या स्तुति तेरे लिए सुखकारी हो सकती है? **को वा**= अथवा कौन मनुष्य है जो **यज्ञैः ते दक्षं परि**=यज्ञ-कर्मों द्वारा तेरी वृद्धि या बल को व्याप्त कर सकता है, इसके लिए पर्याप्त होता है? **केन वा मनसा ते दाशेम**=या हमारे पास वह मन ही कौन-सा है जिससे हम तुझे हवि दे सकें?

विनयः-हे अनन्त देव! हम परिमित मनुष्य किसी भी प्रकार से तेरे सम्पूर्ण रूप को ग्रहण नहीं कर सकते। हम अपने अपूर्ण साधनों द्वारा तेरे पास पहुँचने के लिए-तुझे वर लेने के लिए जीवन-भर यत्न ही करते रहते हैं। हमारे मन में यह सामर्थ्य नहीं कि वह तेरे परिपूर्ण रूप का कभी मनन कर सके, फिर तेरे पास पहुँचने का साधन, उपाय हमारे पास क्या है? हम कभी समझते हैं कि शायद हम हार्दिक भक्ति करके तुझे सुख पहुँचा लेंगे, परन्तु यह तो हमारा तेरे विषय में सांसारिक भाषा में बोलना मात्र है। भक्ति से हमें बेशक बड़ा लाभ मिलता है, परन्तु हमारी हार्दिक प्रार्थनाओं या स्तुतियों का तुझपर वास्तव में किसी प्रकार का प्रभाव नहीं होता। तू तो शुद्धस्वरूप में अलिप्त रहता है। मनुष्य समझते हैं कि यज्ञ तो बड़ी व्यापक वस्तु है, अतः शायद यज्ञ तेरी परिपूर्ण वृद्धि और बल को ग्रहण करने में पर्याप्त हो सकेंगे, परन्तु ऐसा नहीं होता। तू केवल अपने ही परिपूर्ण यज्ञ से अपने को पा सकता है, परन्तु मनुष्य के लिए यज्ञ तो कभी ऐसे परिपूर्ण नहीं हो सकते कि उन यज्ञों से तेरी अनन्त महत्ता का, तेरे अनन्त बल का पार पाया जा सके। ये सब यज्ञ कुछ-कुछ अंश में ही तुझे व्याप्त कर पाते हैं। हम तो बेशक तेरे उतने अंश की प्राप्ति से ही कृतकृत्य हो जाते हैं-''प्यासे को तो एक लोटा-भर पानी पर्याप्त है, उसे समुद्र की गहराई मापने की क्या आवश्यकता है?''[1] परन्तु सत्य यह है कि हम तेरी गहराई को माप नहीं सकते; यज्ञ भी इसमें असमर्थ हैं। यह क्यों न हो? क्योंकि सब स्तुति, भक्ति और यज्ञ आदि हम अपने मन द्वारा ही तो करते हैं; और इस हमारे मन में शक्ति ही कितनी है! अतः यह कहना चाहिए कि हमारा मन ही तुम्हारे योग्य नहीं है। मनुष्य के क्षुद्र मन की तुम अगम तक पहुँच ही नहीं है। फिर वह तन हम कहाँ से लाएँ जिस द्वारा हम अपनी यह भक्ति व यज्ञ व ज्ञान की आहुति तुझ तक पहुँचा सकें? ओह! सचमुच यह स्थूल और सूक्ष्म शरीरों में बँधा हुआ मनुष्य तेरी परिपूर्ण उपासना - तेरी परिपूर्ण आराधना - कभी नहीं कर सकता।

1. श्री रामकृष्ण परमहंस यह कहा करते थे।

- सभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

राजनीति की रोटी बना, दलित!!

जिस प्रकार रोटी को खाने के लिए टुकड़ों में तोड़ा जाता है उसी तरह देश को खाने के लिए जातियों में तोड़ा जा रहा है। पिछले तीन चार महीनों से अखबारों की सुर्खियों से लेकर राजनेताओं के मुख पर दलित शब्द छाया है। यहाँ तक कि अब तो देश के प्रधानमंत्री को भी इस मुद्दे पर बोलना पड़ा। प्रधानमंत्री ने अपने विरोधियों से दलितों के नाम पर राजनीति न करने का अनुरोध किया, साथ ही पीएम ने कहा 'यदि आप हमला करना चाहते हैं तो मुझ पर हमला करें न कि दलित समुदाय पर। यदि आप गोली चलाना चाहते हैं तो मुझ पर गोली चलाएं न कि दलितों पर।' उन्होंने आगे कहा अगर देश को प्रगति करनी है तो शांति, एकता और सद्भाव के मुख्य मंत्र की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। उन्होंने कहा, 'मैं जानता हूं कि यह समस्या सामाजिक है। यह पाप का परिणाम है जो हमारे समाज में घर कर गया है। परन्तु हमें अतिरिक्त सावधानी बरतने और समाज को ऐसे खतरे से बचाने की जरूरत है।' मोदी ने कहा कि समाज को जाति, धर्म और सामाजिक हैसियत के आधार पर बंटने नहीं देना चाहिये। 'जो लोग इस सामाजिक समस्या का समाधान करना चाहते हैं, उनसे मैं ऐसी राजनीति छोड़ने का आग्रह करता हूं जो समाज को बांटती हो। विभाजनकारी राजनीति से देश का कोई भला नहीं होगा।' यदि गौर करें तो प्रधानमन्त्री जी ने बिलकुल सही कहा कि बांटकर कोई समाधान नहीं होता बल्कि एक नई समस्या को और जन्म दे देते हैं जबकि भारतीय समाज में बांटकर ही समस्या का समाधान समझा जाता रहा है, जबकि ऐसा होता नहीं है। महाभारत में हस्तिनापुर को बाँटकर इंद्रप्रस्थ को अलग किया। नतीजा युद्ध भारत को बांटकर पाकिस्तान बनाया। नतीजा चार बार युद्ध हो चुका है और आगे भी होता रहेगा। क्योंकि समाधान चाहने वाले कभी बंटवारे की बात नहीं करते। बंटवारे की बात करते हैं राज करने की इच्छा रखने वाले।

पिछले दिनों गुजरात के ऊना में मरी गाय का चमड़ा उतारने पर गाय को मारने के आरोप में तथाकथित गोरक्षा समिति के लोगों द्वारा चार दलितों की बुरी तरह से पिटाई की गयी थी जिस पर दलितों ने विरोध स्वरूप मरी गाय को उठाने का बहिष्कार कर दिया था तथा इसी मुद्दे को लेकर दलितों ने 5 अगस्त से 15 अगस्त तक अहमदाबाद से ऊना तक ''दलित अस्मिता कूच'' नाम से पैदल मार्च शुरू किया है। जिसके बाद वे 15 अगस्त को ऊना में दलित स्वतंत्रता दिवस मनाएंगे। होना भी चाहिए, हमें लोकतंत्र अधिकार भी देता है। हर किसी को अपनी अस्मिता की रक्षा करनी चाहिए किन्तु साथ में स्मरण रहे कि कहीं आपकी अस्मिता यात्रा राजनीति का निवाला बनकर न रह जाये! कभी पहले सामाजिक व्यवस्था श्रेष्ठ समझी जाती थी। अतः वही तय करती थी कि कौन ऊँचा कौन नीचा है। जाहिर सी बात है उसके निर्णायक मंडल में कोई देव लोक के प्राणी तो नहीं होंगे। यही मनुष्य होंगे जो कभी सामाजिक व्यवस्था के ठेकेदार थे। आज वे राजनैतिक व्यवस्था के ठेकेदार बन गये। सब जानते हैं कि जाति व्यवस्था के कारण दलितों के साथ जातिगत भेदभाव और उत्पीड़न किया जाता रहा है। जाति विधानों का अनुपालन करना हरेक हिन्दू का धार्मिक कर्त्तव्य समझा जाता रहा है। किन्तु जाति के विधानों का उल्लंघन दंडनीय अपराध है। यह कानून भी देश और समाज के हित में नहीं है। तथाकथित हिन्दू धर्म के नवीन रक्षक जो अपना धार्मिक कैरियर सोशल मीडिया पर पोस्ट डालकर या पोस्ट पढ़कर कर रहे हैं। वे कहीं न कहीं देश के सद्भाव को नुकसान पहुंचा रहे हैं क्योंकि सोशल मीडिया सच का दर्पण नहीं बल्कि एक आभासी मीडिया है। यहाँ हर कोई पत्रकार है किन्तु जवाबदेह कोई नहीं।

गुजरात दलित उत्पीड़न भी इसी कड़ी का हिस्सा था। वे तथाकथित गौरक्षक दिखाना चाह रहे थे कि हम हैं तो गाय जिन्दा है वरना नहीं। जो केवल एक घटना थी उसे इलेक्ट्रोनिक मीडिया के बल पर राजनेताओं ने दलित उत्पीड़न की विचारधारा बना डाला जैसे उसमें समस्त हिन्दू व धर्म शामिल होकर स्वीकृति प्रदान कर रहा हो और दलित समुदाय इससे बाहर का विषय हो। हाँ यदि कहीं ऐसा है और दलितों का उत्पीड़न है तो पहली बात यह उत्पीडन तो उत्पीडन है, चाहे उसमें कोई भी हो। दूसरा उसका लोकतान्त्रिक कानूनी तरीके से निदान होना चाहिए, न कि देश धर्म को गाली दी जाए या कोसा जाये। सब जानते हैं संविधान के लागू होने के 65 वर्ष बाद भी दलितों के पेशों में बहुत अधिक परिवर्तन नहीं आया है। हाँ, आरक्षण के कारण दलितों की राजनीति, सरकारी सेवाएं और शिक्षा के क्षेत्र में कुछ हिस्सेदारी हुयी है परन्तु वह भी बहुत कम और निम्न स्तर की ही है। परिणाम स्वरूप दलितों के जीवन स्तर में बहुत थोड़ा अंतर आया है। इसका लाभ कुछ पढ़े-लिखे नौकरी-पेशा और राजनीति में सक्रिय दलितों को ही मिला है। इसका अंदाजा गाँव में रहने वाले बहुसंख्यक दलितों के जीवन स्तर से लगाया जा सकता है। लेकिन इसमें सबसे जरूरी बात यह है कि इन 65 वर्षों में किसी दलित नेता ने दिल से चाहा है कि देश के दलितों का उद्धार हो? शायद नहीं का जवाब ज्यादा आये। जब तक दलित समुदाय अपने नेताओं के भरोसे रहेगा उसका उद्धार होना बहुत मुश्किल है। इसके लिए दलित समुदाय को स्वयं जन-आन्दोलन करना होगा और इन लोगों को समझना होगा कि राजनेताओं ने कभी दलित समस्याओं और दलित मुद्दों को अपनी राजनीति का आधार नहीं बनाया है बल्कि देश को इनकी मूल समस्या से भी भटकाया है। यदि इस संदर्भ में मूल समस्या पर गौर करें तो पाएंगे कि वह इस वजह से दलित नहीं है कि वे गरीब है, उसके पास जमीन नहीं है या उसके पास नौकरी नहीं है, नहीं बल्कि इसका उल्टा है वह दलित सिर्फ इसलिए है क्योंकि कुछेक लोगों ने उसे समाज से हीन समझ लिया उसका निरादर कर दिया। अपने बराबर सम्मान नहीं दिया। वह मेहनती समुदाय है, उसे रोटी कपड़े के साथ सम्मान की भी जरूरत है। यदि कोई उसे सम्मान नहीं दे सकता तो हमारा मानना है कि उसके अपमान का उत्पीड़न का भी कोई अधिकार नहीं है।

-सम्पादकीय

बोध कथा

चिन्ता छोड़ो, प्रसन्न रहो!

रणवीर जब फाँसी की कोठरी में था, तो इसकी कोठरी के सामने वाली कोठरी में एक युवक बन्दी रहता था। उस पर भी कत्ल का मुकद्दमा था। दो कत्ल उसने किये थे, परन्तु उसे आशा थी कि वह छूट जायेगा। अतः वह हर समय गाता रहता था-

तूँ बख्श गुनाह हुण मेरे,
मैं खादे कुक्कड़ तेरे।

परन्तु मुकद्दमा आगे बढ़ा। उसकी अपील अस्वीकार हो गई।

दूसरे दिन मैं रणवीर को मिलने गया तो उसके सामने वाली कोठरी में सफेद केशों वाला एक बूढ़ा बैठा था- चकित और व्याकुल! मृत्यु उसकी आँखों में नृत्य-सी करती दिखाई देती थी। मैंने उसकी ओर एक बार देखा; समझा, कोई दूसरा बन्दी आ गया है। रणवीर से पूछा-''वह जो नवयुवक बन्दी सामने वाली कोठरी में था, कहाँ गया?''

रणवीर ने सामने देखते हुए कहा-''वही तो है इस कोठरी में। कल इसकी अपील अस्वीकार हो गई। तभी से चुप है चिन्ता में डूबा हुआ, और रात-ही-रात में इसके काले बाल सफेद हो गये हैं। युवक से वृद्ध बन गया है वह।''

यह है चिन्ता का परिणाम! अंग्रेज़ी की एक कहावत है जिसका अर्थ है-

'आप रोइये, आपकी आपत्तियां बढ़ेंगी;
मुस्काइये, तो संकट कम होने लगेंगे;
और ज़ोर से हँसिये तो संकट समाप्त हो जायेंगे।'
दिल दे तो इस मिज़ाज का परवरदिगार दे,
जो रंज की घड़ियाँ भी खुशी में गुज़ार दे।।

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

हिन्दुओं में एकता की कमी होने के कारण

- डॉ. विवेक आर्य

....एक ईसाई अगर ईसाई मत छोड़ता है तो पूरे ईसाई मत में खलबली मच जाती है। एक मुसलमान अगर इस्लाम छोड़ता है तो पूरे इस्लाम जगत में फतवे से लेकर जान से मारने की कवायद शुरू हो जाती है। मगर जब कोई हिन्दू धर्म परिवर्तन करता है तो कोई हो-हल्ला नहीं होता। एक सामान्य हिन्दू यह सोचता है कि उसका लोक-परलोक न बिगड़े दूसरे से क्या लेना है। यह दूसरे के दुःख-सुख में भाग न लेने की आदत के कारण हिंदुओं में एक मत नहीं है।....

गत् 1200 वर्ष का इतिहास उठाकर देखिये। हिन्दू समाज विदेशी आक्रमणकारियों के सामने अपनी एकता की कमी के चलते गुलाम बने। इस सामाजिक एकता की कमी का क्या कारण था? इस लेख के माध्यम से हम हिंदुओं में एकता की कमी के कारणों का विश्लेषण करेगे।

1. हिन्दू समाज में ईश्वर को एक मानने वाले (एकेश्वरवादी), अनेक मानने वाले (अनेकेश्वरवादी) एवं ईश्वर के अस्तित्व से इंकार करने वाले (नास्तिक) सभी अपनी परस्पर विरोधी मान्यताओं को पोषित करने में लगे रहते हैं। जबकि वेदों में केवल एक ईश्वर होने का विधान बताया गया है। अनेक मत होने के कारण से हिंदुओं में एकता स्थापित नहीं हो पाती।

2. हिन्दू समाज अनेक सम्प्रदाय, मत-मतान्तर में विभाजित है। हर मत-सम्प्रदाय को मानने वाला केवल अपने मत को श्रेष्ठ, केवल अपने मत को चलाने वाले अथवा मठाधीश को सत्य, केवल अपने मत की मान्यताओं को सही बताता है। बहुधा इन मान्यताओं में परस्पर विरोध होता है। इस कारण से हिंदुओं में एकता स्थापित नहीं हो पाती।

3. हिन्दू समाज में कुछ लोग नारी को श्रेष्ठ समझते हैं जबकि कुछ निकृष्ठ समझते हैं, कुछ जातिवाद और छुआछूत को नहीं मानते, कुछ घोर जातिवादी हैं। इस कारण से अनेक हिन्दू समाज के सदस्य धर्म परिवर्तन कर विधर्मी भी बन जाते हैं। इस कारण से हिंदुओं में एकता स्थापित नहीं हो पाती।

4. हिन्दू समाज में एक जैन भी हिन्दु कहलाता है जिसके अनुसार सिर की जूं को मारना घोर पाप है जबकि एक सिख भी हिन्दू है जो झटका तरीके से मुर्गा-बकरा खाना अपना धर्म समझता है। परस्पर विरोधी मान्यताओं के कारण दोनों का आपस में तालमेल नहीं है। इस कारण से हिन्दुओं में एकता स्थापित नहीं हो पाती।

5. हिन्दू समाज में कोई निराकार ईश्वर का उपासक है। कोई साकार ईश्वर का उपासक है। कोई अपने गुरु अथवा मठाधीश को ही ईश्वर समझता है। कोई पर्वत, पेड़, पत्थर सभी को ईश्वर समझ कर ईश्वर की पूजा करता है। कोई सब कुछ स्वप्न बताता है। कोई माया का प्रभाव बताता है। अनेक मान्यताओं, अनेक पूजा-विधियां आदि होने के कारण हिन्दू समाज भ्रमित है। इस कारण से हिंदुओं में एकता स्थापित नहीं हो पाती।

6. एक मुसलमान के लिए कुरान अंतिम एवं सर्वमान्य धर्म पुस्तक है। एक ईसाई के लिए बाइबिल अंतिम एवं सर्वमान्य धर्म पुस्तक है। एक हिन्दू के लिए वेद, पुराण, गीता, मत विशेष की पुस्तक तक अनेक विकल्प होने के कारण हिंदुओं में एकमत नहीं हैं। सभी अपनी-अपनी पुस्तक को श्रेष्ठ और अन्य को गलत बताते हैं। इस कारण से हिन्दुओं में एकता स्थापित नहीं हो पाती।

7. हिन्दू समाज में पूजा का स्वरुप निरन्तर बदल रहा है। एक मुसलमान वैसे ही नमाज पढ़ता है, जैसे उसके पूर्वज पढ़ते थे। एक ईसाई वैसे ही बाइबिल की प्रार्थना करता है, जैसे उसके पूर्वज करते थे। एक हिन्दू निरन्तर नवीन प्रयोग ही करने में लगा हुआ है। पहले वह वेद विदित निराकार ईश्वर की उपासना करता था। बाद में ईश्वर को साकार मानकर श्री राम और कृष्ण की मूर्तियां बना ली। उससे पूर्ति न हुई तो विभिन्न अवतार कल्पित कर लिए। प्रयोग यहाँ तक नहीं रुका। आज 33 करोड़ देवी देवता कम पड़ गए। इसलिए साई बाबा उर्फ चाँद मियां और अजमेर वाले ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की कब्रों पर सर पटकते फिरते हैं। आगे संभवत सुन्नत करवाने और कलमा पढ़ने की तैयारी है। जहाँ ऐसी अंधेरगर्दी होगी वहां पर एक मत होना असंभव है। इस कारण से हिंदुओं में एकता स्थापित नहीं हो पाती।

8. एक ईसाई अगर ईसाई मत छोड़ता है तो पूरे ईसाई मत में खलबली मच जाती है। एक मुसलमान अगर इस्लाम छोड़ता है तो पूरे इस्लाम जगत में फतवे से लेकर जान से मारने की कवायद शुरू हो जाती है। मगर जब कोई हिन्दू धर्म परिवर्तन करता है तो कोई हो-हल्ला नहीं होता। एक सामान्य हिन्दू यह सोचता है कि उसका लोक-परलोक न बिगड़े दूसरे से क्या लेना है। यह दूसरे के दुःख-सुख में भाग न लेने की आदत के कारण हिंदुओं में एक मत नहीं है। इस कारण से हिंदुओं में एकता स्थापित नहीं हो पाती।

स्वामी श्रद्धानंद इन्हीं कारणों से हिन्दू धर्म को चूं-चूं का मुरब्बा कहते थे। स्वामी दयानंद के अनुसार जब तक एक धर्म पुस्तक वेद, एक पूजा विधि, एक भाषा प्रचलित नहीं होगी तब तक हिन्दू समाज संगठित नहीं हो सकता।

यूरोप में धार्मिक दहशत का माहौल!

....अमेरिकी और यूरोपीय देशों में मुस्लिम कट्टरपंथियों द्वारा एक के बाद एक ताबड़तोड़ हमले और ऐसे समय पर बी.बी.सी. की रिपोर्ट आना कहीं न कहीं इस समाज के अन्दर भय सा पैदा करती दिखाई दे रही है। पिछले कई सालों से यूरोपीय देशों में आम जनजीवन पर लगातार आतंकी हमले हो ही रहे थे कि अचानक फ्रांस के चर्च में हुए एक हमले में पादरी की गला रेत कर हत्या ने पूरी दुनिया में खलबली मचा दी। इसमें हैरानी की बात यह है कि ये हत्या स्कूल जाने वाले दो लड़कों ने की है। जिनमें एक बार फिर चौंकाने वाली बात यही सामने आई है कि चर्च में पादरी का गला रेतने के बाद ये हत्यारे अल्लाहु-अकबर चिल्लाते हुए भाग रहे थे।...

आस्ट्रिया के लोगों में शॉटगन खरीदने की होड़ सी मच गयी है। दूसरा अमरीका के राज्य टेक्सास में ईसाई समुदाय के एक गुट ने मुसलमानों के विरुद्ध हथियार लेकर रैली निकाली। तीसरा पाकिस्तानी मूल के एक अमेरिकी दंपत्ति नाजिया और फैसल अली को अमेरिका में विमान से उतार दिया गया क्योंकि उनके ''अल्लाह'' कहने और फोन पर एस.एम.एस. करने से विमान में सवार क्रू की एक सदस्य ''असहज'' महसूस कर रही थी। इसके बाद BBC की रिपोर्ट और गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बुक के अनुसार इस्लाम दुनिया का सर्वाधिक तेजी से बढता हुआ धर्म है चाहे यह बढ़ोत्तरी धर्मान्तरण के वजह से हो या जनसंख्या वृद्धि से! उपरोक्त सारी खबरें कहीं न कहीं आपस में जुड़ी सी दिखाई दे रही हैं। जुड़ी क्यों है? अमेरिकी और यूरोपीय देशों में मुस्लिम कट्टरपंथियों द्वारा एक के बाद एक ताबड़तोड़ हमले और ऐसे समय पर बी.बी.सी. की रिपोर्ट आना कहीं न कहीं इस समाज के अन्दर भय सा पैदा करती दिखाई दे रही हैं। पिछले कई सालों से यूरोपीय देशों में आम जनजीवन पर लगातार आतंकी हमले हो ही रहे थे कि अचानक फ्रांस के चर्च में हुए एक हमले में पादरी की गला रेत कर हत्या ने पूरी दुनिया में खलबली मचा दी। इसमें हैरानी की बात यह है कि ये हत्या स्कूल जाने वाले दो लड़कों ने की है। जिनमें एक बार फिर चौंकाने वाली बात यही सामने आई है कि चर्च में पादरी का गला रेतने के बाद ये हत्यारे अल्लाहु-अकबर चिल्लाते हुए भाग रहे थे। इस घटना को यूरोप के इसाई समुदाय की धार्मिक भावना पर भी हमला कहा जा सकता है। हमेशा इस्लाम के जानकार और मानने वाले आरोप जड़ते हुए कहते हैं कि हर एक हमले के बाद बिना वजह इस्लाम को बदनाम किया जा रहा है। इस आरोप को लगाते हुए वे लोग जितना आतंकियों को कोसते हैं। उससे दुगने आवेग से आतंकी हमले में इस्लाम का नाम लेकर प्रश्नचिह्न लगाने वालों को लेकर मुखर हो जाते हैं।

यदि कुछ घटना का प्रति उत्तर सैनिक कार्यवाही से अलग छोड़ दें तो हर एक आतंकी हमले का जवाब पूरा विश्व समुदाय कलम और सोशल मीडिया द्वारा निंदा से देता है। अभी हाल ही में अमेरिकी ब्लॉगर पामेला जैलर ने जर्मनी में हुए हमले के बाद अपने इस ब्लॉग से सनसनी फैला दी। पामेला का गुस्सा उनके ब्लॉग से सहज ही समझा जा सकता है। वे लिखती हैं- "लोग चाहें या न चाहें पर जर्मनी पर इस्लाम का कब्जा हो जायेगा, और यह कब्जा युद्ध के द्वारा नहीं किया जायेगा बल्कि सच्चाई यह है कि जर्मन लोग बच्चे पैदा नहीं करते और एक मुसलमान के सात से आठ बच्चे होते हैं। सिर्फ इतना ही नहीं आपकी बेटियां दाढ़ी वाले मुसलमानों से विवाह करेंगी और हिजाब भी पहनेंगी और उनके बच्चे भी दाढ़ियां रखेंगे। मुसलमान चार शादियाँ करेंगे और 27 बच्चे पैदा करेंगे। जर्मन लोगों के पास क्या होगा एक बच्चा और शायद एक पालतू कुत्ता? जर्मन लोगों ने मुसलमानों का बहुत लम्बे समय तक फायदा उठाया है ताकि वे अपनी मर्सिडीज चला सकें। अब इस्लाम आ रहा है और आपकी बेटियां हिजाब पहनेंगी।"

आज बहुत सारे यूरोपियन देश अपनी सीमाओं पर तारबंदी और सुरक्षा के इंतजाम कड़े कर रहे हैं और कुछ लेखक तो जर्मनी और फ्रांस जैसे देशों को देखते हुए वहां के शरणार्थी और कट्टरता के माहौल के संकट को गृहयुद्ध और तीसरा विश्व युद्ध तक से जोड़ कर देख रहे हैं। एक जुलाई से स्लोवाकिया को यूरोपीय संघ की अध्यक्षता मिलने से पहले ही इस देश के प्रधानमंत्री रॉबर्ट फिको ने घोषणा की थी कि हम अपने देश में एक भी मुसलमान को बर्दाश्त नहीं कर सकते। एशिया टाइम्स के अनुसार उसने कहा कि मुसलमानों का यूरोप में आगमन इस क्षेत्र के लिए हानिकारक है तो मुसलमानों के लिए उनके यहां कोई जगह नहीं है। हम अपने देश की परंपराओं को बदलना नहीं चाहते। कुछ समय पहले इतावली पत्रकार ओरियाना फलासी ने अपनी पुस्तक 'तर्क की शक्ति' में घोषणा की थी कि 'यूरोप इस्लाम का एक प्रान्त और उपनिवेश बनता जा रहा है। पता नहीं प्रसिद्ध इतालवी पत्रकार अपनी जगह पूरी तरह ठीक हैं या नहीं? किन्तु वे लिखते हैं कि यूरोप की प्राचीन मजबूत ईसाई पकड़ तेजी से ढीली पड़कर इस्लाम के लिये मार्ग प्रशस्त कर रही है। विश्व को हिला देने वाली इस धार्मिक घटना के लिये प्रमुख रूप से दो तत्त्व उत्तरदायी हैं। एक तो ईसाइयत का खोखलापन और दूसरा उत्साहहीन जन्मदर। क्योंकि अपनी परम्परा और मूल्यों के साथ सम्बन्ध क्षीण करता हुआ यूरोप उत्तर ईसाई समाज बनता जा रहा है। पिछली दो पीढ़ियों में आस्थावान और धर्मपालक ईसाइयों की संख्या इतनी तेजी से कम हुई है कि पर्यवेक्षकों ने इसे नया अन्ध महाद्वीप कहना आरम्भ कर दिया है। विश्लेषकों का पहले ही अनुमान है कि मस्जिदों में उपासना करने वालों की संख्या प्रत्येक सप्ताह चर्च आफ इंग्लैण्ड से अधिक होती है। इसमें उन्होंने दूसरा कारण गिनाते हुए लिखा कि उत्साहहीन जन्मदर। वे लिखते हैं कि स्वदेशी यूरोपवासी नष्ट हो रहे हैं और विदेशी मुस्लिम समाज की संख्या निरंतर बढ़ रही है। किसी जनसंख्या को कायम रखने के लिये आवश्यक है कि महिलाओं का सन्तान धारण करने का औसत 2.1 हो परन्तु पूरे यूरोपीय संघ में यह दर एक तिहाई 1.5 प्रति महिला है और वह भी गिर रही है इसी रिक्त स्थान में इस्लाम और मुसलमान को प्रवेश मिल रहा है जहाँ ईसाइयत अपनी गति खो रही है वहीं इस्लाम सशक्त, दृढ़ और जनसँख्या बढ़ाने के लिए महत्त्वाकांक्षी है। जहाँ यूरोपवासी बड़ी आयु में भी कम बच्चे पैदा करते हैं वहीं मुसलमान युवावस्था में ही बड़ी मात्रा में सन्तानों को जन्म देते हैं। फिलहाल यूरोपियन संघ का 5 प्रतिशत या लगभग 2 करोड़ लोग मुसलमान हैं यदि यही रुझान जारी रहा तो 2020 तक यह संख्या 10 प्रतिशत तक पहुँच जायेगी। जैसाकि दिखाई पड़ रहा है कि गैर मुसलमान नयी इस्लामी व्यवस्था की ओर प्रवृत्त हुये तो

- शेष पृष्ठ 7 पर

हैदराबाद के आर्य समाजी शहीदों की स्मृति में विशेष

ऐ मेरे वतन के लोगो, जरा याद करो आर्य समाजियों की कुर्बानी

संसार के सम्मानित राष्ट्रों का इतिहास उन व्यक्तियों के चरित्रों से सदा भरपूर रहा है, जिन्होंने उच्च एवं पवित्र उद्देश्यों की पूर्ति के लिए महान् से महान् त्याग किया और समय पड़ने पर इस संघर्ष में अपने जीवन को न्योछावर कर दिया और पीछे बलिदानों के अवशेष रख गए, जो अनुगामियों का पथ प्रदर्शन कर सकते हैं।

शहीदों को मृत्यु कभी स्पर्श नहीं करती अपितु वे स्वयं मर कर अमर हो जाते हैं। इतिहास साक्षी है। ऐसी महान् आत्माओं का रक्त कदापि व्यर्थ नहीं गया अपितु समय आने पर एक ऐसे प्रखर प्रचंड रूप में प्रवाहित हो निकला जिसमें हिंसा, अत्याचार और पाशविकता के दल स्वत: निमग्न हो गए। ये व्यक्ति धर्म-प्रचार, सदुपदेश, प्रजावाद की प्रस्थापना, शांति और प्रेम एवं सत्य को साधारण व्यक्तियों तक पहुंचाने के लिये अपने जीवन-लक्ष्य की कठिनाईयों को पार कर आगे बढ़ते ही रहे। इन्होंने सदा पराक्रान्तों का साथ दिया और मानवता के उच्च आदर्शों के रक्षक हुए और इन हेतुओं से निज तन-मन-धन की बलि देकर स्पष्ट कर दिया कि इनका सेवा कार्य में कितना उत्साह था तथा बलिवेदी से कितना ऊंचा प्रेम था।

आर्य समाज के शहीद मरने के बाद अमर हो गये और इन हुतात्माओं के रक्त से हैदराबाद में वैदिक धर्म का जो चमन सींचा गया, वह अब एक विस्तृत उद्यान बन गया है और रियासत में वैदिक धर्म का नव सन्देश दे रहा है। यहां हम कुछ आर्य समाजी शहीदों का संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं जो वर्तमान में संसार में उपस्थित तो नहीं हैं पर वे सबके हृदयों में स्मरण रहेंगे और ऐसा प्रतीत होता है कि हम इन्हें कभी भूल नहीं सकेंगे।

1. वेद प्रकाश जी :- वेद प्रकाश जी का पूर्व नाम दासप्पा था। दासप्पा संवत् 1827 में गुजोटी में पैदा हुए। इनकी माता का नाम रेवती बाई और पिताश्री का नाम रामप्पा था। गरीब माता-पिता को इसकी क्या सूचना थी कि उनका बेटा बड़ा होकर हुतात्मा बनेगा और वैदिक धर्म के मार्ग में शहीद होकर अमर हो जाएगा। दासप्पा ने मराठी माध्यम से आठवीं श्रेणी तक शिक्षा ग्रहण की। जैसे-जैसे ये बढ़ते गये वैसे-वैसे वे धर्म की ओर आकर्षित होते गये। वे आर्य समाज के सत्संगों में बराबर सम्मिलित होते थे। वैदिक धर्म के आकर्षण ने इन्हें महर्षि दयानन्द का पक्का भक्त बना दिया। आर्य समाजी बनने के बाद यह वेद प्रकाश कहलाने लगे थे। इनका आर्य समाज में असाधारण प्रेम एवं निष्ठा के ही कारण गुंजोटी में आर्य समाज की नींव डाली गयी पर स्थानीय ईर्ष्यालु यवन इन्हें देखकर जलने लगे थे। वेद प्रकाश जी सुगठित शरीर एवं सद्गुण रखते थे और लाठी-तलवार चलाने की विद्या में पर्याप्त दक्ष थे। इनकी यह दक्षता कई भयंकर संकटों के समय इनकी सहायक सिद्ध हुई। कई बार विरोधी दल ने इन पर आक्रमण किये और ये अपने आपको सुरक्षित रखने में सफल हुए।

गुंजोटी का छोटे खाँ नाम का एक पठान स्त्रियों को गलत निगाहों से देखता था। एक दिन वेद प्रकाश जी ने इसे ऐसा करने से रोका और सावधान किया कि भविष्य में इस प्रकार कुदृष्टि मातृसमाज पर न डालें। यह बात गुण्डों को हृदयग्राही न थी और सब इनके शत्रु हो गए। वेद प्रकाश जी ने गुंजोटी में हिन्दुओं के लिये पान की एक दुकान खोल दी और चांद खाँ (पान का एक व्यापारी) इनका शत्रु हो गया और भीतर ही भीतर इनके विरुद्ध षड्यंत्र रचने लगा।

एक दिन यवनों ने स्थानीय आर्य समाज के मन्त्री के मकान पर अकस्मात् धावा बोल दिया, इसकी सूचना वेद प्रकाश जी को मिली, वे इन आक्रमणकारियों को रोकने के लिए नि:शस्त्र ही चले गये। मन्त्री के मकान के समीप दो-तीन मुसलमानों ने इन्हें पकड़ लिया और आठ-नौ व्यक्तियों ने इन्हें नीचे गिरा कर हत्या कर दी। विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि उस दिन पुलिस ने वहाँ के प्रतिष्ठित हिन्दुओं को थाने में बुलाकर बैठा रखा था। आक्रमकर्त्ताओं और हत्यारों को पहचान लिया गया और न्यायालय में गवाह भी उपस्थित किये, पर फिर भी हत्यारों को निर्दोष घोषित कर दिया गया। वेद प्रकाश जी का रक्त

हैदराबाद में पहला रक्त था जो बड़ी निर्दयता के साथ बहाया गया था और इसके बाद वीर आर्यों के बलिदानों का एक सिलसिला सा चल पड़ा।

2. धर्म प्रकाश जी :- धर्म प्रकाश जी का पूर्व नाम नागप्पा था। नागप्पा जी का जन्म कल्याणी में संवत् 1839 में हुआ था। इनके पिताश्री का नाम सायन्ना था। इनका पदार्पण जब आर्य समाज में हुआ तब से ये धर्म प्रकाश कहलाने लगे। कल्याणी एक मुस्लिम नवाब की जागीर थी। वहां मुसलमानों का अत्याचार नंग-नाच कर रहा था। मुसलमानों के अत्याचारों को देखकर धर्म प्रकाश इसकी रोक-थाम की तैयारी में लग गये। हिन्दुओं को शस्त्र विद्या सिखाने लगे। कल्याणी के मुसलमान हिन्दुओं के शारीरिक अभ्यास से रुष्ट हो गये और उन्होंने इनकी हत्या करने की कमर कस ली। कल्याणी के इस धर्मवीर पर कई बार आक्रमण किये गये पर आक्रमकारियों को सफलता नहीं मिली।

कल्याणी के खाकसार इनकी हत्या की ताक में रहने लगे। 27 जून 1837 ई. की रात को धर्म प्रकाश आर्य समाज कल्याणी के सत्संग से अपने घर वापस जा रहे थे कि खाकसारों ने इन्हें एक गली में घेर कर बरछों और भालों की सहायता से मार डाला। वेद प्रकाश की हत्या से आर्य समाज में शोक व दु:ख की लहर दौड़ गयी। इस हत्याकाण्ड के हत्यारे भी न्यायालय से निर्दोष छोड़ दिये गये।

3. महादेव जी :- महादेव जी अकोलगा के रहने वाले थे। साकोल आर्य समाज के सत्संगों में जब इन्हें कई बार सम्मिलित होने का अवसर मिला, तब वैदिक धर्म का जादू इन पर चढ़ गया। इनके मन और मस्तिष्क पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि आर्य समाजी बन जाने के बाद वैदिक धर्म के प्रचार की धुन लग गयी। तरुणोत्साह और साहस इन्हें इस मार्ग पर आगे बढ़ाता ही रहा। महादेव जी की मुखाकृति पर तेज था। भाषण देते समय इनके मुख से जो वाक्य निकलते, उन्हें लोग बड़ी तन्मयता और रुचि से सुनते और एक तरुण आर्य युवक को प्रचार के काम में इस प्रकार तल्लीन देखकर लोगों को भी इच्छा होती थी कि वे भी इसी प्रकार बनें। महादेव जी के प्रचार का काम जब प्रगति पर था उस समय मुसलमान इनके अकारण शत्रु बन गये। कई बार इन पर इस दृष्टि से आक्रमण हुए कि वे सदा के लिए मौन हो जाएँ पर वे बचते ही रहे।

एक दिन की घटना है कि महादेव जी अपने प्रिय धर्म प्रचारार्थ कहीं जा रहे थे कि रास्ते में किसी अज्ञात व्यक्ति ने पीछे से आकर छुरा घोंप दिया और 14 जुलाई 1938 के दिन यह आर्य युवक 25 वर्ष की आयु में सदा के लिए इस संसार से बिदा हो गया।

4. श्याम लाल जी :- धर्मवीर श्याम लाल जी का जन्म 1903 ई. भालकी में हुआ था। इनके पिताश्री का नाम भोला प्रसाद और माता का छोटूबाई था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा मराठी में हुई। ये एक पौराणिक परिवार से थे। इनके एक मामा आर्य समाजी थे, जिनके प्रभाव से श्याम लाल जी के ज्येष्ठ भ्राता बंसीलाल जी वैदिक धर्म के अनुयायी और स्वामी दयानन्द के अन्त:करण के भक्त बन गये और आर्य समाज के सर्वप्रिय नेता भी कहलाने लगे। गुलबर्गा में आपके ही प्रयासों से आर्य समाज की स्थापना हुई। वे स्वयं इस समाज के मन्त्री बनकर कार्य संचालन करते रहे। 1925 ई. में वकील बने और उदगीर में वकालत करने लगे। निजी जीविकोपयोगी कार्य करते हुए आर्य समाज का प्रचार भी करते थे। 1926 ई. में इन्हें चर्म रोग लग गया और वह इतना बढ़ा कि पूरा शरीर फूल गया। रोग निवारणार्थ आप लाहौर गये। अभी आप लाहौर में ही थे कि 1926 ई. में स्वामी श्रद्धानन्द जी शहीद हो गये। स्वामी जी के इस बलिदान का प्रभाव इन पर अत्यधिक पड़ा। लाहौर से वापस आकर उदगीर में आर्य समाज की स्थापना की और प्रतिज्ञा की कि आजीवन वैदिक धर्म का प्रचार करेंगे। उदगीर के तात्कालीन मुसलमान तहसीलदार ने स्थानीय मुसलमानों को प्रेरित कर इनके मकान पर आक्रमण करवा दिया, परन्तु यह आक्रमण विफल रहा।

आर्य समाज उदगीर की स्थापना के बाद आपके अथक प्रयासों से विजय दशमी के अवसर पर प्रथम बार जुलूस निकाला गया। होली के जुलूस के अवसर पर आप पर पुन: आक्रमण हुआ पर इस बार भी आप बच गये। श्याम लाल जी ने अछूतों के लिए एक पाठशाला, एक व्यायाम शाला तथा एक नि:शुल्क चिकित्सालय भी स्थापित किया।

1928 ई. में उदगीर आर्य समाज का वार्षिकोत्सव हुआ और इसी के बाद पुलिस आपका पीछा करने लगी। इसी वर्ष धारा 104 के अधीन आप पर झूठा मुकद्दमा चलाया गया और आपसे दो हजार की जमानत और मुचलका लिया गया। श्याम लाल जी उदगीर से बाहर निकलकर भालकी, कल्याणी, औराद, शाहजहानी, लातूर तथा औसा आदि स्थानों पर प्रचार करने लगे। कई बार मुसलमानों ने आप पर आक्रमण किया और कई ऐसे अवसर आये जब कि हिन्दुओं ने आपको अपने पास आश्रय देना अस्वीकार किया। आपने कई रातें मार्ग पर चलते हुए बितायीं और दिन में फिर प्रचार कार्य किया। 1935 ई. में माणिक नगर की यात्रा के अवसर पर मुसलमानों ने आप पर छुरा घोंप देने का प्रयत्न किया पर एक नवयुवक बीच में आया, स्वयं जख्मी हुआ और इन्हें बचा लिया। 1938 ई. में इन पर पुलिस ने एक झूठा मुकद्दमा चलाया और न्यायालय ने इन्हें दीर्घकालिक दण्ड दिया। अभी आप कारावास में दंड भोग रहे थे कि आपका देहांत हो गया। पं. श्याम लाल जी का नाम हैदराबाद आर्य समाज के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा रहेगा क्योंकि ये अपने अथक प्रयत्नों, संघर्ष और श्रद्धा से आर्य समाज को शक्तिशाली और विस्तृत करने की चिन्ता अन्तिम श्वास तक करते रहे।

5. व्यंकटराव जी :- व्यंकटराव जी कंधार जिला नांदेड़ के रहने वाले थे। इन्होंने स्टेट कांग्रेस द्वारा संचालित सत्याग्रह में भाग लिया और दण्ड भोगते रहे। कारावास के अधिकारियों द्वारा मार-पीट के कारण 18 अप्रैल 1938 ई. में आप परलोक सिधार गये।

6. विष्णु भगवान् जी :- विष्णु भगवान् जी ताण्डूर (गुलबर्गा) के रहने वाले थे। इन्होंने गुलबर्गा में ही सत्याग्रह किया और वहीं इन्हें कारावास का दण्ड दिया गया। आपको गुलबर्गा से औरंगाबाद और फिर हैदराबाद जेल में रखा गया और यहां दूसरे सत्याग्रहियों के साथ इन्हें इतना पीटा गया कि ये सहन न कर सके और 2 मई 1939 ई. में आपने 30 वर्ष की आयु में अपना शरीरान्त किया।

7. माधवराव सदाशिराव जी :- आप लातूर के रहने वाले थे। आपने 30 वर्ष की आयु में आर्य सत्याग्रह में भाग लिया और गुलबर्गा जेल में बन्द कर दिये गए। 26 मई 1939 ई. के दिन कड़कती धूप में नंगे पैर जेल में कठिन परिश्रम करने से रोगग्रस्त हो गए। चिकित्सा का कोई प्रबन्ध नहीं किया गया और आप इस प्रकार निजाम सरकार की क्रूरता के कारण देहावसान कर गये। माधव राव सदाशिराव के देहान्त की सूचना पाकर असंख्य नर-नारी इनके अन्तिम दर्शन करने गए पर पुलिस ने रोक दिया और जेल में ही इनका शव अग्नि की भेंट कर दिया गया।

8. पाण्डुरंग जी :- उस्मानाबाद के रहने वाले युवा आर्य सत्याग्रही को सत्याग्रह के कारण ही कारावास का दंड दिया गया था। गुलबर्गा जेल में इन पर इन्फ्लुएंजा का आक्रमण हुआ पर चिकित्सा का कोई प्रबन्ध न किया गया। हालत चिन्ताजनक होती गई। 25 मई 1939 के दिन इन्हें नागरिक औषधालय में भेजा गया और वहीं 27 मई को इनका देहान्त हो गया। असंख्य नर-नारी इनके अन्तिम दर्शनों को आए पर पुलिस ने इन्हें वापस जाने पर विवश कर दिया और पुलिस द्वारा ही इनका अन्तिम संस्कार किया गया।

9. राधाकृष्ण जी :- राधाकृष्ण जी निजामाबाद के एक राजस्थानी थे। 1903 ई. में आपका जन्म हुआ था। आपके पिता का नाम जीतमल था। 1934 ई. में आप आर्य समाजी बने और तभी से इसके प्रचार की धुन लग गई। इन्होंने ही निजामाबाद में आर्य समाज की स्थापना की थी। इसी कारण आप पुलिस की वक्रदृष्टि में खटने लगे। मुहर्रम के दिनों में आप पर मुकद्दमा चलाया गया और इनसे एक साल के लिए दो हजार रुपये का मुचलका लेकर छोड़ा गया। आर्य सत्याग्रह के समय आप बड़े उत्साह के साथ चन्दा एकत्रित करने में जुटे थे। 2 सितम्बर 1931 ई. के दिन एक अरबी ने छुरा घोंपकर इन्हे मार डाला और यह बात सर्व विदित हो गई कि इनकी हत्या के षड्यन्त्र में पुलिस का हाथ था।

10. लक्ष्मण राव जी :- आपने धार्मिक

- शेष पृष्ठ 5 पर

पृष्ठ 4 का शेष

अधिकारों की प्राप्ति के लिए सत्याग्रह किया। जेल के नृशंसात्मक कठोर व्यवहार को सहन न कर सकने के कारण 3 अगस्त 1939 ई. को हैदराबाद जेल में आपका देहान्त हो गया।

11. शिव चन्द्र जी :- आपका जन्म 3 मार्च 1916 ई. में दुबलगुण्डी में हुआ था। आपके पिताश्री का नाम अन्नपक्षप्पा था। 1935 ई. में मैट्रिक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। सरकार की ओर से आपको छात्रवृत्ति भी प्राप्त हुई थी। आप हुमनाबाद की एक पाठशाला में अध्यापक हो गये थे। पाठशाला के अवकाश के समय आप आर्य समाज के साहित्य का अध्ययन किया करते थे। आर्य समाज के लिए आपने बड़े उत्साह और श्रद्धा से काम किया। शोलापुर से आप सत्याग्रहियों को हैदराबाद लाते थे और सत्याग्रह के समाचार हैदराबाद से बाहर भेजते थे। 3 मार्च 1942 ई. के दिन होली में जुलूस के अवसर पर मुसलमानों ने आक्रमण कर दिया, फलस्वरूप आप शहीद हो गए। आप के साथ आपके साथी लक्ष्मण राव जी, राम जी अगड़े और नरसिंह राव जी गोलियों का निशाना बने थे।

12. राम कृष्ण जी :- राम कृष्ण जी का जन्म लावसी ग्राम में एक ब्राह्मण कुल में हुआ था और यह शहीद होने से केवल दो सप्ताह पूर्व ही आर्य समाजी बने थे। एक दिन पठानों ने घोषणा की थी कि 'उस दिन वे मन्दिर को तोड़ेंगे, जिसे धर्म पर विश्वास हो वे आकर उन मन्दिरों को उनके हाथों से बचा लें।' सब हिन्दू घबरा कर अपने-अपने मकानों में बैठ गये किन्तु जब राम ने यह घोषण सुनी तो वे क्रोधाग्नि से जल उठे। पुजारियों ने कभी इन्हें मन्दिर में प्रवेश होने नहीं दिया था और फिर आर्य समाजी होने के कारण इन्हें मन्दिर और इन मन्दिरों की मूर्तियों से क्या रुचि, परन्तु पठानों की इस घोषणा को इन्होंने सम्पूर्ण हिन्दू जाति के लिए एक चैलेंज समझा और जाति की मान रक्षा हेतु मन्दिर द्वार पर अपना डेरा डाला। यहाँ इन पर गोलियों की वर्षा हुई, घायल होने पर भी आपने पठानों को मार भगाया और हिन्दू जाति की लाज रख ली। स्वयं शहीद होकर इन्होंने मन्दिर की रक्षा की और जिस जाति में वे पैदा हुए थे, उसकी प्रतिष्ठा रख ली।

13. भीम राव जी :- आप हिपला (उदगीर) के रहने वाले थे। इनके मित्र माणिक राव की बहन को मुसलमानों ने मुसलमान बना लिया था। भीमराव ने उसे शुद्ध कर लिया था। इस कारण मुसलमानों ने क्रोधित होकर इनके घर को आग लगा दी और इन्हें मार कर इनके हाथ-पांव काट डाले और इन्हें आग में जला दिया।

14. माणिक राव जी :- यह भी हिपला (उदगीर) के रहने वाले थे। इनकी बहन को मुसलमान बना लिया गया था। जब इनकी बहन को शुद्ध कर लिया गया तो मुसलमानों ने माणिक राव जी को गोलियों का निशाना बना दिया था।

15. सत्य नारायण जी :- आप अम्बोलगा (वीदर) के रहने वाले थे। आर्य समाज का काम बड़े जोश के साथ करते थे, इसीलिए मुसलमान इनके शत्रु हो गए। मुहर्रम के दिनों में वे बाजार से जा रहे थे कि एक मुसलमान ने पीछे से तलवार से हमला कर दिया। वे तुरन्त ही चिकित्सालय पहुंचाए गये पर वहां जाते ही परलोक सिधार गये।

16. महादेव जी :- यह तिवाड़े के रहने वाले थे। गुलबर्गा में ही सत्याग्रह करने के कारण जेल में डाल दिए गये थे। जेल वालों के अत्याचार से 1939 ई. में ही चल बसे।

17. अर्जुन सिंह जी :- आप आर्य समाज के एक नर-रत्न थे। आप तालुका कन्नड़ (औरंगाबाद) में पैदा हुए थे। बचपन से ही आप हैदराबाद में रहने लगे थे। अपने उत्साह और निष्ठा के कारण आप हैदराबाद दयानन्द मुक्ति दल के सेनापति बनाए गए थे। सम्वत् 1861 में जंगली विठ्ठोबा की यात्रा में कुशल प्रबन्ध करने के बाद घर वापस लौट रहे थे कि मार्ग में कुछ सशस्त्र मुसलमानों ने आप पर आक्रमण कर दिया, तुरन्त ही उस्मानिया दवाखाना भेजे गए पर दूसरे ही दिन परलोक सिधार गये।

18. गोविन्द राव जी :- आप निलंगा जिला बीदर के रहने वाले थे। सत्याग्रह करके जेल गये। पर वहां के अत्याचारों को सहन न कर सकने के कारण देहावसान कर गये।

19. गोन्दि राव जी, लक्ष्मण राव जी :- इन दोनों ने सत्याग्रह में अपनी जान की बाजी लगा दी।

आर्य समाजी शहीदों का यह बहुत ही संक्षिप्त परिचय है। जिसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि हैदराबाद में वे निजाम सरकार और मुसलमानों के अत्याचारों का निशाना बने और वैदिक पताका को ऊँचा रखने के लिए, इन्होंने अपना अन्तिम रक्त बिन्दु तक बहा दिया।

यदि किसी आर्य महानुभाव के पास उपरोक्त क्रांतिकारियों की फोटो उपलब्ध हो तो वे उस फोटो को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को उपलब्ध कराने की कृपा करें। जिससे इन क्रांतिकारियों की स्मृति में कार्यक्रम आयोजित कर इनको सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की जा सके और लोगों को इनके विषय में सम्पूर्ण जानकारी हासिल कराई जा सके। फोटो aryasabha@yahoo.com पर ईमेल कर सकते हैं या पजीकृत डाक द्वारा 'महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली -1' के पते पर भेजें।

- सम्पादक

प्रथम पृष्ठ का शेष

दलितों को हिन्दू धर्म से अलग करने .....

सबकी सहमति ओम ध्वनि से प्राप्त की।

अक्टूबर 2016 नेपाल में होने वाले आर्य महासम्मेलन में भारत के विभिन्न प्रान्तों से जाने वाले प्रतिनिधियों एवं वहां की व्यवस्थाओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए श्री प्रकाश आर्य जी ने बताया कि नेपाल एक विकासशील देश है वहां की समाज की आर्थिक स्थिति को देखते हुए भारत की सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने महासम्मेलन में होने वाले भोजन एवं आवास व्यवस्था को स्वयं वहन करने को कहा था जिसे पूरा करना अब सभा का कर्त्तव्य बन गया है। इसके लिए आवश्यक है कि हम सब अधिक से अधिक संख्या में नेपाल महासम्मेलन में पहुंचें। समस्त राज्यों से आए पदाधिकारियों ने अपने-अपने राज्य से नेपाल महासम्मेलन में जाने वाले प्रतिनिधियों का अनुमान बतलाया उत्तर प्रदेश से 5000, छत्तीसगढ़ से 500, राजस्थान से 500, विहार से 500, मध्य भारत से 300, उड़ीसा से 250, गुजरात से 150, उत्तराखण्ड से 100, महाराष्ट्र से 100, कर्नाटक से 50 प्रतिनिधियों के जाने की सम्भावना है।

नेपाल आर्य महासम्मेलन में जाने वाले प्रतिनिधियों के आवेदन पत्र प्राप्त करने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त 2016 निर्धारित की गयी जिससे महासम्मेलन में सभी प्रतिनिधियों के भोजन-पानी व आवास की समुचित व्यवस्था समय रहते की जा सके।

सभा का अगला प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए श्री विनय आर्य जी ने बतलाया कि देश में कैराना जैसी बढ़ती परिस्थितियों में आर्य समाज ने पूर्व में क्या भूमिका निभाई और अब जब देश के अधिकांश हिस्सों से हिन्दुओं का पलायन हो रहा है या लोग धर्म परिवर्तन करके या तो मुसलमान बनने को मजबूर हो रहे हैं या ईसाई। ऐसे में उन्हें धर्म परिवर्तन करने से कैसे रोका जाए। हिन्दुओं और वैदिक संस्कृति का स्थायित्व कैसे कायम रहे इस पर गम्भीरता से विचार-विर्मश हुआ।

दलित समाज को हिन्दुओं से अलग समाज स्थापित करने की परिथितियां प्रस्तुत की जा रही हैं। श्री विनय आर्य जी ने जानकारी देते हुए कहा कि बंगाल में 16 जिले ऐसे हैं जहां हमेशा मुसलमान ही नेता चुना जाता है। संगठन के नाम पर हिन्दुओं में एकता नहीं है। इस पर समस्त पदाधिकारियों ने अपने-अपने विचार रखे व स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी ने अपने मन की पीड़ा व्यक्त करते हुए अपने ओजस्वी विचार सभा के सम्मुख रखे।

दलितोद्धार के विषय में निर्णय हुआ कि एक सार्वजनिक ड्राफ्ट बनाकर सभी प्रान्तीय सभाओं के पास भेजा जाए कि ऐसे कार्यक्रम बनाएं जिसमें दलितों, वंचितों और पिछड़े वर्ग के लोगों को मंचासीन किया जाए। सार्वजनिक सम्मेलन किये जाएं। आर्य समाज मानव मात्र के कल्याण के लिए सभी पंथ के लोगों को जागरूक करें। दलितों की बस्ती में जाकर उन्हें यजमान बनाकर यज्ञ करें। उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी ने महत्त्वपूर्ण सुझाव दिया कि आर्य समाजों में पुरोहितों की नियुक्ति की विज्ञापन निकाले जिसमें दलित पुरोहित को वरीयता दी जाए और अपने-अपने आर्यसमाजों मे दलितों को यजमान बनाने का प्रयत्न करें।

एक छोटी सी पुस्तिका दलितों के लिए प्रकाशित की जाए जिसमें आर्य समाज ने दलितों के लिए क्या किया अंकित हो व एक अन्य पुस्तिका समाज के उच्च वर्ग में भी वितरित की जाए जिसमें चिन्ता व भविष्य कव वर्णन हो कि यदि समय रहते दलितों, अछूतों, वंचितो को आज गले न लगाया गया तो कल ये विधर्मी होंगे, जो समत हिन्दू समाज के लिए खतरे की घंटी होगी।

यदि कोई गरीब दलित आर्यसमाज में अपने परिवार की कन्या या लड़के की शादी नि:शुल्क कराने के लिए लिए आवेदन करता है तो उससे कोई शुल्क न

- शेष पृष्ठ 7 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक में पधारे सभाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य। इस अवसर पर भारत वर्ष की सभी प्रान्तीय सभाओं के पदाधिकायिों को भी विशेष आमन्त्रित सदस्य के रूप में आमन्त्रित किया गया गया। प्रथम पंक्ति : आर्य प्रतिनिधि सभा म्यामां (बर्मा) के प्रधान श्री अशोक खेत्रपाल, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य, उप प्रधान श्री आचार्य विजयपाल जी, महाशय धर्मपाल जी, सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, उत्कल सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी, सभा उप प्रधान डॉ. राधाकृष्ण वर्मा, साध्वी उत्तमा यति। द्वितीय पंक्ति : गुजरात से पधारे श्री हंसमुख भाई परमार, श्री रणजीत सिंह परमार, उपमन्त्री श्री विनय आर्य, श्री पी.सी. सूद (हिमाचल), श्री यशपाल जानवानी (महाराष्ट्र), श्री अरुण प्रकाश वर्मा, श्री भारत भूषण त्रिपाठी (झारखण्ड), श्री शिव कुमार मदान (दिल्ली), श्री गंगा प्रसाद (बिहार), श्री व्यासनन्दन शास्त्री (बिहार), श्री राकेश चौहान (ज. क.), श्री प्रेम अरोड़ा (दिल्ली), श्री दलबीर सिंह राघव, श्री भगवान दास अग्रवाल। तृतीय पंक्ति : मा. सूबे सिंह (हरियाणा), श्री सुधीर आर्य (राजस्थान) श्री माधव राव देशपाण्डे (महाराष्ट्र), आचार्य एम. आर. राजेश (केरल), श्री दयाराम बसैये (महाराष्ट्र), आचार्य अशूदेव (छत्तीसगढ़), श्री सत्यवीर शास्त्री (मध्य प्रदेश व विदर्भ), चतुर्थ पंक्ति : आचार्य सन्तोष (नागालैंड), श्री विवेक शिनॉय (केरल), डॉ. ब्रह्ममुनि (महाराष्ट्र), डॉ. विनय विद्यालंकार (उत्तराखण्ड), आचार्य सनत कुमार, श्री दीनानाथ वर्मा (छत्तीसगढ़), श्री चन्द्रशेखर जी एवं श्री राजकुमार श्रीवास्तव (झारखण्ड) एवं सभाों के पदाधिकारी एवं सदस्यगण। (नोट : बैठक में उपस्थित पदाधिकारियों के नाम प्रकाशित करने में भूल हो सकती है, तथा कुछ नाम छूट भी गए हैं, इसके लिए अग्रिम क्षमा प्रार्थी हैं।)

Glimpses of the SamaVeda

- Priyavrata Das

Continue from last issue :-

The Speech Divine

"May the divine speech, the source of communication of the faculties, mental and spirttual, the purifier and bestower of knowledge, the recompenser of worship, be the fountain-head of inspiration and accomplishment for all our organized and benevolent acts."

"May our Lord, the divine preceptor, never deprive us of the gracious gift of speech. May He the giver of supreme wisdom, shower on us, the delectable speech. May that speech save us and also our sons and grandsons from all kinds of violence and envy."

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसुः।। (Sv.189)
Pavaka nah sarasvati vajebhir vajinivati.
yajnam vastu dhiyavasuh..

त्वष्टा नो दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः।
पुत्रैर्भ्रातृभरदितिर्नु पातु नो दुष्टरं त्रामणं वचः।। (Sv.299)
Tvasta no daivyam vacah parjanyo brahmanaspatih.
putrair bhratrbhir aditir nu patu no dustaram tramanam vacah..

Fame through Good Deeds

"May my fame spread in regions extending from earth to heaven. May I be a recipient of reputation from men of learning and men of power. May I be renowned amongst men of power. May I be recognized amongst the people of wealth. May I be never depried of my glory. May I have good name amongst the members of assembly and may I be known for my eloquence."

"May I acclaim the valorous deeds of the resplendent soul, the lower self, which he has achieved; he has removed the cloud of blind and dark impulses; and cast out the evil thoughts; he has broken a way for the torrents of wisdom through obstacles."

यशो मा द्यावापृथिवी यशो मेन्द्रबृहस्पती।
यशो भगस्य विन्दतु यशो मा प्रतिमुच्यताम्।
यशस्व्या३स्याः संसदोऽहं प्रवदिता स्याम्।। (Sv.611)
yaso ma dyava prthivi yaso mendra brhaspati.
yaso bhagasya vindatu yaso ma pratimucyatam.
yasasvyasyah sam sadoahm pravadita syam.

इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्रवोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री।
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत् पर्वतानाम्।। (Sv.612)
Indrasya nu viryani pravocam yani cakara prathamani vajri.
ahann ahim anvapas tatarda pra vaksana abhinat parvatanam..

Let the Demon and the Miser be vanquished.

The hero is himself courageous and infuses new life into others. He faces injustice of all sorts. He has concern for wiping out the sorrow of others. Human heart becomes poor in absence of heroic thoughts. O man, be a hero and protect the weak to give shelter to the shelterless, to provide food for the hungry, to impart wisdom to the ignorant.

The verse says, 'The demon and the miserly feelings make the heart dry.' That which forcefully destroys peace and unity is the demon. The demon obstructs the progress of others and expands the empire of terror and grave injustice, He spreads the law of jungle where might is right. He does enormous harm to the society and mankind. The other type of enemy is miserliness which is an expression of cruelty. A miser is unsociable, unkind and noncooperative. A demon pushes a person standing on the bank of a river into the river and loots away all his belongings. A miser does not even look towards the person drowning in the river what to speak of saving him. One is wicked, the other is terribly selfish.

इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय।
हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातिं वरिवस्कृण्वन् वृजनस्य राजा।। (Sv.540)
Indurvaji pavate gonyogha indre somh saha invan madaya.
hanti rakso badhate paryaratim varivas km\nvan vrjanasya raja..

To be Conti....

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ – 10 (अ)

गतांक से आगे....

गुरु शिष्य वार्तालाप प्रकरणम् के पश्चात् दूसरा प्रकरण नाम निवास स्थान प्रकरणम् से जाना जाता है। नाम निवास स्थान प्रकरणम् (2)

तव किं नाम अस्ति?	तेरा क्या नाम है?
देवदत्तः	देवदत्त ।
कोध्ऽभिजनो युवयोः वर्तते? कौन है?	तुम दोनों का अभिजनदेश
कुरुक्षेत्रम्।	कुरुक्षेत्र ।
युष्माकं जन्मदेशः को विद्यते?	तुम्हारा जन्मदेश कौन है?
पञ्चालाः।	पञ्जाब।
भवन्तः कुत्रत्याः?	आप कहाँ के हो?
वयं दक्षिणात्याः स्मः	हम दक्षिणी हैं।
तत्र का भवत्याः निवास स्थानम्?	वहां आपके निवास की कौन नगरी है?
मुम्बापुरी।	मुम्बई ।
इमे क्व निवसन्ति ?	ये लोग कहां रहते हैं ?
नेपाले	नेपाल में ।
अयं किम् अधीते ?	यह क्या पढ़ता है ?
व्याकरणम् ।	व्याकरण को ।
त्वया किमधीतम् ?	तूने क्या पढ़ा है ?
न्यायशास्त्रम् ।	न्यायशास्त्र
भवता किं पठितमस्ति ?	आपने क्या पढ़ा है ?
पूर्वमीमांसाशास्त्रम् ।	पूर्वमीमांसाशास्त्र ।
अयं भवदीयश्छात्रः किं प्रचर्चयति?	यह आपका विद्यार्थी क्या पढ़ता है?
ऋग्वेदम्	ऋग्वेद को ।
त्वं कुत्र गच्छसि ?	तू कहां जाता है ?
पाठाय व्रजामि	पढ़ने के लिये जाता हूं ।
कस्मात् अधीषे ?	किससे पढ़ता है ?
यज्ञदत्त-अध्यापकात् ।	यज्ञदत्त अध्यापक से ।
इमे कुतोध्ऽभ्यस्यन्ति ?	ये किससे पढ़ते हैं ?
विष्णुमित्रात् ।	विष्णुमित्र से ।
तव अध्ययने कियन्तः संवत्सरा व्यतीताः ?	तुझ को पढ़ते हुए कितने वर्ष बीते ?
पञ्चि ।	पांच ।
भवान् कति वार्षिकः ?	आप कितने वर्ष के हुए?
त्रयोदशवार्षिकः ।	तेरह वर्ष का ।
त्वया पठनारम्भः कदा तः?	तूने पढ़ने का आरम्भ कब किया था ?
यदा अहम् अष्टवार्षिकोऽभूवम्।	जब मैं 8 वर्ष का हुआ था।
तव मातापितरौ जीवतो न वा?	तेरे माता-पिता जीते हैं वा नहीं ?
विद्येते ।	जीते हैं ।
तव कति भ्रातरो भगिन्यश्च?	तेरे कितने भाई और बहिन हैं ?
त्रयो भ्रातरः एकाश्च भगिनि अस्ति।	तीन भाई और एक बहन है ।
तेषु त्वं ज्यष्ठस्ते, सा वा ?	नमें तू ज्येष्ठ वा तेरे भाई अथवा बहिन?
अहम् एव अग्रजोध्ऽस्मि।	मैंही सबसे पहिले जन्मा हूं।
तव पितरौ विद्वांसौ न वा ?	तेरे माता-पिता पढ़े हैं वा नहीं ?
महाविद्वांसौ स्तः ।	बड़े विद्वान् हैं ।
तर्हि त्वया पित्रोः सकाशात्कुतो न विद्या गृहीता?	तो तूने माता-पिता से विद्या ग्रहण क्यों न की?
अष्टमवर्षपर्य्यन्तं ता।	आठ वर्ष पर्यन्त की थी।
अत ऊर्ध्वं कुतो न ता?	इससे आगे क्यों न की?
मातृमान् पितृमान् आचार्य्यवान् पुरुषो वेदेति शास्त्रविधेः।	माता-पिता से आठवें वर्ष पर्यन्त, इसके आगे आचार्य से पढ़ने का शास्त्र में विधान है इस से।
अन्यच्च गृहकार्यबाहुल्येन निरन्तरम् अध्ययनमेव न जायतेऽतः ।	और भी घर में बहुत काम करने से निरन्तर पढ़ना नहीं हो सकता इसलिए भी।
अतः परं कियत् वर्षपर्यन्तम् अध्येष्यसे?	इसके आगे कितने वर्षपर्यन्त पढ़ेगा?
पञ्चत्रिंशत् वर्षाणि ।	पैंतीस वर्ष तक ।

क्रमशः

– आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

देखें तो पं. लेखराम को क्या हुआ?

पण्डितजी के बलिदान से कुछ समय पहले की घटना है। पण्डित जी वजीराबाद (पश्चिमी पंजाब) के आर्यसमाज के उत्सव पर गये। महात्मा मुंशीराम भी वहाँ गये। उन्हीं दिनों मिर्जाई मत के मौलवी नूरुद्दीन भी वहाँ आर्यसमाज के प्रभाव को दूर करने के लिए गये और मुसलमानों को आर्यसमाज के विरुद्ध बहुत भड़काया। यह मिर्जाई लोगों की निश्चित नीति रही है। अब पाकिस्तान में अपने बोये हुए फल को चख रहे हैं। यही मौलवी साहिब मिर्जाई मत के प्रथम खलीफा बने थे।

पण्डित लेखराम जी ने ईश्वर के एकत्व व ईशोपासना पर एक ऐसा प्रभावशाली व्याख्यान दिया कि मुसलमान भी वाह-वाह कर उठे और इस व्याख्यान को सुनकर उन्हें मिर्जाइयों से घृणा हो गई।

पण्डित जी भोजन करके समाज-मन्दिर लौट रहे थे कि बाजार में एक मिर्जाई से बातचीत करने लग गये। मिर्जा गुलाम अहमद अब तक कई बार पण्डित जी को मौत की धमकियाँ दे चुके थे। बाजार में कई मुसलमान इकट्ठे हो गये। मिर्जाई ने मुसलमानों को एक बार फिर भड़काने में सफलता पा ली। आर्य लोग चिन्तित होकर महात्मा मुंशीराम जी के पास आये। वे स्वयं बाजार गये, जाकर देखा कि पण्डित लेखराम जी की ज्ञान-प्रसूता, रसभरी ओजस्वी वाणी को सुनकर सब मुसलमान भाई शान्त खड़े हैं। पण्डित जी उन्हें ईश्वर की एकता, ईश्वर के स्वरूप और ईश की उपासना पर विचार देकर 'शिरक' के गढ़े से निकाल रहे हैं। व्यक्ति पूजा ही तो मानव के आध्यात्मिक रोगों का एक मुख्य कारण है।

यह घटना महात्माजी ने पण्डितजी के जीवन-चरित्र में दी है या नहीं, यह मुझे स्मरण नहीं। इतना ध्यान है कि हमने पण्डित लेखराम जी पर लिखी अपनी छोटी व बड़ी दोनों पुस्तकों में नहीं दी।

यह घटना प्रसिद्ध कहानीकार सुदर्शन जी ने महात्मा जी के व्याख्यानों के संग्रह 'पुष्प-वर्षा' में दी है।

साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

आर्य विद्या परिषद दिल्ली के अन्तर्गत आगामी प्रतियोगिताएं

प्रतियोगिता	दिनांक एवं समय	स्थान – विद्यालय का नाम
भाषण प्रतियोगिता	24 अगस्त 2016 प्रात: 9 बजे	लालीबाई बाल विद्यालय, राम बाग, नई दिल्ली–110007
समूह गान	30 अगस्त, 2016 प्रात: 9 बजे	बिड़ला आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, कमला नगर दिल्ली–7

आप सबसे निवेदन है कि आप अपने एवं अपने विद्यालयों के बच्चों को इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करें। अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नं. 9810061263, 9868233795 पर सम्पर्क करें। – ***सुरेन्द्र कुमार रैली, प्रस्तौता***

पृष्ठ 3 का शेष

यूरोप में धार्मिक दहशत ...

यह महाद्वीप मुस्लिम बहुसंख्यक क्षेत्र बन जायेगा। जब ऐसा होगा तो भव्य चर्च पुरानी सभ्यता के अवशेष बनकर रह जायंगे। यह भी हो सकता है कि सउदी शैली का प्रशासन उसे मस्जिद में न परिवर्तित कर दे या तालिबान जैसा प्रशासन उसे उड़ा न दे। हो सकता है इटली, फ्रांसीसी, ब्रिटिश और अन्य महान राष्ट्रीय संस्कृतियों का पतन हो जाये और उनका स्थान उत्तरी अफ्रीका, तुर्की, उपमहाद्वीप और अन्य तत्वों के विलयन से बनी परा राष्ट्रीय इस्लामी पहचान ले ले! ये कोई मानव व्यंग नहीं है ना भय खड़ा कर देने वाला भाषण यह सिर्फ विश्लेषण है या एक कयास जो यूरोप के चिन्तक अपने भविष्य के लिए लगा रहे हैं। हिंसक संस्कृति हमेशा से उदार संस्कृति का दोहन करती आई है या यह कहो आड़ चाहे धर्म की हो या साम्राज्य के विस्तार की महत्वकांक्षी हर जगह एक संस्कृति दूसरे की संस्कृति के भक्षण को मुहं खोले खड़ी है!!

–राजीव चौधरी

पृष्ठ 5 का शेष

दलितों को हिन्दू धर्म से अलग ....

लिया जाए। अगला प्रस्ताव दिल्ली हाई कोर्ट में विचाराधीन मुकद्दमें के सन्दर्भ था जिस पर एर्व सम्मति से निर्णय लिया गया कि सभा एवं आर्यसमाज का दीर्घकालीन हित देखते हुए ही आगे बढ़ना उचित होगा। प्रस्ताव को भी ओम ध्वनि के साथ पारित किया गया।

अगला प्रस्ताव आर्य समाज के प्रचार प्रसार के लिए एक टी.वी. चैनल की आवश्यता के सन्दर्भ में था। सभा प्रधान जी ने आर्यजनों की भावनाओं को देखते हुए महाशय जी से इस सम्बन्ध में निवेदन करते हुए कहा कि आपके सहयोग एवं आशीवार्द से ही आर्यसमाज इस लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

इस पर महाशय धर्मपाल जी ने अपने चिर–परिचित अन्दाज में कहा कि परमात्मा का आशीवार्द एवं आप लोगों की सद्भावना बनी रहे तो यह कार्य शीघ्र पूरा होगा, ऐसी आशाी है। सभी उपस्थित सदस्यों ने महाशय धर्मपाल जी के आश्वासन पर करतल ध्वनि के स्वागत किया।

इस अवसर पर डॉ. ब्रह्ममुनि, श्री दयाराम बैसैये, डॉ. विनय विद्यालंकार, श्री विनय आर्य, श्री व्यास नन्दन शास्त्री ने भी बैठक में अपने विचार प्रस्तुत किए।

– प्रकाश आर्य, सभा मन्त्री

आर्यसमाज कालकाजी का वेद प्रचार सप्ताह

22 से 28 अगस्त, 2016

वेद कथा : आचार्य धर्मवीर जी
भजनोपदेशक : पं. सत्यपाल पथिक जी
भजन–प्रवचन : सायं 6:30 से 8:30 बजे
आर्य सम्मेलन – 28 अगस्त, 2016

– सुधीर मदान,मन्त्री

श्रावणी उपाकर्म एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व

आर्य समाज (ए.सी. ब्लॉक) टैगोर गार्डन 22 से 28 अगस्त 2016 तक श्रावणी उपाकर्म एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व को वेद प्रचार सप्ताह के रूप में आयोजन कर रहा है। यज्ञ, वेद कथा व प्रवचन श्री उमेश कुलश्रेष्ठ जी एवं भजन श्री धीरजकान्त जी प्रस्तुत करेंगे। – *मन्त्री*

जरा याद करो कुर्बानी

21 अगस्त, 2016 सायं 5:30बजे
आर्यसमाज रोहतास नगर, शाहदरा

आर्यसमाज जंगपुरा भोगल का श्रावणी पर्व

26 से 28 अगस्त, 2016
प्रवचन : आचार्य श्यामलाल जी
भजनोपदेशक : श्रीमती सुदेश आर्या
भजन–प्रवचन : सायं 7:30 से 9:30 बजे

11 कुण्डिय यज्ञ एवं समापन

28 अगस्त : प्रात: 8 से 12:30 बजे
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर धर्मलाभ प्राप्त करें। – *ए.सी.धीर, मन्त्री*

आर्यसमाज एल ब्लाक आनन्द विहार हरि नगर नई दिल्ली में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

25 अगस्त, 2016

यज्ञ : सायं 3:30 बजे
ब्रह्मा : आचार्य कुंवरपाल शास्त्री
भजन : पं. राजबीर शास्त्री
प्रवचन : आचार्य विद्यादेव जी
आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

– महेन्द्र सिंह, मन्त्री

आर्यजन ध्यान दें

समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि यदि आपके कोई सम्बन्धी/रिश्तेदार/परिचित या आर्य विचारधारा से प्रेरित कोई व्यक्ति भारत के अन्दमान–निकोबार, लक्ष्यद्वीप या गोवा में रहते हैं अथवा नौकरी करते हैं तो कृपया उनका नाम, पता, दूरभाष तथा ईमेल हमें भेजने की कृपा करें ताकि उनसे सम्पर्क करके वहां आर्यसमाज की स्थापना का प्रयास किया जा सके। –***मन्त्री, सार्वदेशिक सभा***

ईमेल : aryasabha@yahoo.com

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है। **वार्षिक शुल्क 250/– रुपये** तथा **आजीवन शुल्क** (दस वर्षों हेतु) **1000/– रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। – ***सम्पादक***

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि–

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों–रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उनकी ईमेल आई.डी. लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस. एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा।

– सम्पादक

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ–साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली– 110001

☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/–रु. सैंकड़ा	मात्र 300/–रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : –दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली

दूरभाष : 011–23360150, 09540040339

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● **प्रचार संस्करण (अजिल्द)** 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● **विशेष संस्करण (सजिल्द)** 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● **स्थूलाक्षर सजिल्द** 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 15 अगस्त से रविवार 21 अगस्त, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 18 अगस्त/ 19 अगस्त, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 17 अगस्त, 2016

मैं आर्यसमाजी कैसे बना? - पदमचन्द आर्य

मा. लक्ष्मणदास शर्मा की प्रेरणा से बना आर्यसमाजी

मेरा नाम पदम चन्द आर्य है। मैं ग्राम नगीना (मेवात) जिला गुड़गांव वर्तमान में 120/18 फ्रेन्ड कालोनी गुड़गांव में रहता हूं। वर्तमान में मेरी आयु 78 वर्ष है। आज से लगभग 64 वर्ष पूर्व हमारे ग्राम के आर्य समाज मन्दिर में एक मीटिंग (मा. लक्ष्मण दास शर्मा जी जोकि मूल निवासी नगीना के ही थे लेकिन बाद में 1947 के हिन्दू-मुस्लिम झगड़े के कारण सपरिवार अलवर चले गये थे पर गांव से लगाव होने के कारण नगीना आते-जाते रहते थे।) की जिसमें नवयुवकों को बुलाया और सभी उपस्थित युवकों को आर्य समाज के बारे में बताकर एक-दो पुस्तक वैदिक सन्ध्या की दीं। मैं भी उस मीटिंग में शामिल हुआ था।

कुछ पुराने धार्मिक संस्कार और मा. लक्ष्मण दास जी की प्रेरणा से आर्य समाज से ऐसा लगाव हुआ, दिमाग में ऐसा जुनून पैदा हो गया कि रात-दिन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में ही अपना अधिकांश समय लगाने लगा। मेवात जैसे मुस्लिम क्षेत्र में अनेक हिन्दू लड़कियों को निकालना, धर्म परिवर्तन करने वाले हिन्दुओं को वापस लाना, अनेक आर्य समाज के उत्सवों, सम्मेलनों, आर्य वीरदल के शिविर लगाने का प्रमुख कार्य संस्था के माध्यम से करता रहता था।

आर्य समाज के उच्चाधिकारियों से परिचय भी हुआ लाला राम गोपाल जी शाल वाले, ओम प्रकाश जी त्यागी, बाल दिवाकर जी हंस, ब्र. राज सिंह जी, स्वामी प्रेमानन्द जी, स्वामी धर्ममुनि, बहादुरगढ़, श्री विनय आर्य जी, श्री धर्मपाल जी आर्य आर्ष साहित्य ट्रस्ट वाले और अनेक साधू, सन्यासी, उपदेशकों के सम्पर्क में रहा हूं। गो रक्षा आन्दोलन में जेल भी गया था। इस प्रकार आज भी आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में ही सारा समय व्यतीत कर रहा हूं।

- प्रधान,
आर्य वेद प्रचार मण्डल

आपके साथ ऐसा क्या हुआ कि आप आर्यसमाज की ओर आकर्षित हुए। यदि आपने भी किसी की प्रेरणा/विचारों से प्रभावित होकर आर्यसमाज में प्रवेश करके वैदिक संस्कृति को अपनाया है तो यह कॉलम आपके लिए ही है। आप अपनी घटना/ प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखकर भेजिए। आपके विवरण को युवाओं की प्रेरणा एवं जानकारी के लिए आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा। हमारा पता है-

'सम्पादक'
साप्ताहिक आर्य सन्देश,
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
email : aryasabha@yahoo.com

स्वास्थ्य चर्चा

फोड़ा पकाने के लिए व उससे सम्बन्धित बीमारियां

पिछले अंक में हमने फोड़े फुंसियों के इलाज के बारे में चर्चा की थी इस सन्दर्भ में कुछ और कारगर घरेलू उपायों की चर्चा करते हैं।

1. मैनसिल पानी में घिस गर्म कर फोड़े पर लेप कर दें।
2. लोबान, कपूर 5-5 ग्राम पानी में पीस कर लेप करें।
3. एक प्याज गर्म राख में भून कर कुचल कर गुड में मिलाकर फोड़े पर बांध दें।
4. धनिए को पानी में पीस टिकिया बना कर फोड़े पर बांधने से घाव भर जाता है।
5. लहसुन को पीस कर फोड़े पर बांधने से घाव भर जाता है।
6. तुलसी के एक ग्राम पत्ते पानी में पीस फोड़े पर बांधने से खून बहना बन्द हो जाता है।

फूलबहरी -चमड़ी पर सफेद दाग

1. लहसुन का रस 10 ग्राम, सिप्रिट 40 ग्राम मिलाकर रूई से प्रात: सायं लगाएं।
2. लहसंन 25 ग्राम कूट कर 100 ग्राम तिल के तेल में जलाएं। ठंडा कर दोनों समय लगाएं।
3. बावची 50 ग्राम को दरदरा कूट कर अदरक के रस में 3 दिन तक भिगोएं। हर रोज रस बदलते रहें। फिर खुष्क कर कूट छान लें। एक ग्राम दवा पानी से प्रात: खाएं और बावची को ही पानी में पीसकर फुलबहरी पर लगाएं।।

साभार : चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित ''चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद'' पुस्तक से साभार। यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली -110001 के पते पर भेज सकते हैं।

प्रतिष्ठा में,

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
के अवसर पर
वितरण हेतु पत्रक

आपको जानकर हर्ष होगा कि आर्यजगत् के वैदिक विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार जी (दिल्ली) द्वारा योगीराज श्रीकृष्ण जी के प्रेरक जीवन पर लेख लिखा गया है, जिसे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जन सामान्य में वितरण हेतु सुन्दर चार रंगों में आर्ट पेपर पर फोल्डर के रूप में प्रकाशित कराया गया है।

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थानों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में क्रय करके उस पर अपनी आर्यसमाज/संस्था का नाम प्रकाशित कराकर योगीराज श्रीकृष्ण जी के जन्मदिवस 'जन्माष्टमी' के अवसर पर जनता में वितरित करें। पत्रक प्राप्त करने हेतु 9540040339 पर सम्पर्क करें। - *महामन्त्री*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह